भारत सरकार ने इस किस्म को वर्ष 1988 में अधिसूचित किया। यह किस्म देश के विभिन्न प्याज उगाने वाले भागों में उगाने के लिए उपयुक्त है। इस प्रजाति के शल्क कन्द गहरे लाल रंग के गोलाकार होते हैं। फसल रोपाई 90 से 100 दिनों में तैयार हो जाती है। पैदावार 250 से 300 कुन्तल प्रति हेक्टेयर है।

एग्रीफाउण्ड लाइट रेड (रवी) :

यह प्रजाति राष्ट्रीय बागवानी अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान द्वारा विकसित की गयी है। भारत सरकार ने इस किस्म को वर्ष 1996 में अधिसूचित किया है गाँठे मध्यम आकार की गोलाकार तथा हल्के लाल रंग की होती हैं इसकी भण्डारण क्षमता अच्छी है रोपाई के 110 से 120 दिनों में तैयार हो जाती है। पैदावार 300 से 350 कुन्तल प्रति हेक्टेयर है।

एन.एच.आर.डी.एफ रेड-2 लाईन-355:

यह प्रजाति राष्ट्रीय बागवानी अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान द्वारा विकसित की गयी है। भारत सरकार ने इस किस्म को वर्ष 2012 में अधिसूचित किया। शल्क कन्द लाल रंग के गोलाकार होते हैं। फसल रोपाई के 100 से 120 दिनों में तैयार हो जाती है। पैदावार 325 से 375 कुन्तल प्रति हेक्टेयर है।

एन.एच.आर.डी.एफ रेड- 2 लाईन-28 :

यह प्रजाति राष्ट्रीय बागवानी अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान द्वारा विकसित की गयी है। भारत सरकार ने इस किस्म को वर्ष 2007 में अधिसूचित किया है। इस प्रजाति का चुनाव पंजाब प्रान्त के पटियाला क्षेत्र से किया गया है। शल्क कन्द गहरे लाल रंग के गोलाकार होते हैं। फसल रोपाई के 100 से 120 दिनों में तैयार हो जाती है। पैदावार 325 से 375 कुन्तल प्रति हेक्टेयर है।

बुआई का समय : खरीफ प्याज के लिए बीज बुआई पूरे जून महीने की जाती है। रबी प्याज के लिए मैदानी भागों में प्याज की बुआई अक्टूबर से मध्य नवम्बर तक की जाती है।

बीज की मात्रा : एक हेक्टेयर की रोपाई के लिए 7 से 8 किलोग्राम बीज पर्याप्त रहता है।

पौध तैयार करना : बीज को ऊँची उठी हुई क्यारियों में बोया जाता है। क्यारियों की चौड़ाई 60 से 70 सेमी. तथा लम्बाई सुविधानुसार रखते हैं। 5 से 7 ग्राम बीज प्रति वर्ग मीटर की दर से बुआई करनी चाहिए। जिससे स्वस्थ पौधे तैयार हों यदि रोग लगने की संभवना हो तो बीज तथा पौधशाला की मिट्टी को कवकनाशी जैसे थाइरम या कैप्टान आदि से उपचारित करना चाहिए। भूमि उपचारित करने के लिए 4 से 5 ग्राम दवा प्रति वर्ग मीटर एवं 2 से 3 ग्राम दवा प्रति किलो बीज के लिए पर्याप्त होती है। खरीफ में 6 से 7 सप्ताह तथा रवी में 8 से 9 सप्ताह में पौध रोपाई के लिए तैयार हो जाते हैं। बीज को 5 से 6 सेमी की दूरी पर कतारों में बोना चाहिए।

खेत की तैयारी एवं खाद तथा उर्वरक : 20 से 25 टन प्रति हेक्टेयर गोबर की खाद पर्याप्त होती है। राष्ट्रीय बागवानी अनुसंधान प्याज के लिए 100:50:50:30 किलोग्राम नाइट्रोजन एवं सल्फर पोटास देने की सिफारिस की गई है।

पौध की रोपाई के लिए खेत की तैयारी : 2 से 3 जुताई करके खेत को अच्छी प्रकार से समतल बनाकर क्यारियों व नालियों में बाँट देते हैं फिर 25 टन सड़ी हुई गोबर की खाद प्रति हेक्टेयर की दर से क्यारियों में अच्छी तरह से मिला देते हैं रोपाई के एक दिन पूर्व 200 किलोग्राम कैल्शियम अमोनियम नाईट्रेट 300 किलोग्राम सिंगल सुपर फास्फेट एवं 100 किलोग्राम म्यूरेट आफ पोटास तथा 20 से 30 किलोग्राम बेटोनाई सल्फर प्रति हेक्टेयर की दर से मिट्टी में मिलाकर क्यारियों को पुनः समतल बना देते हैं।